INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

एस. आर. हरनोट की कहानियों में पर्यावरण विमर्श

एन. चन्द्र राव

सहायक प्राध्यापक
ऋषि बंकिम चन्द्र कॉलेज फॉर वीमेन
नैहाटी, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल

90 के दशक में उभरे एस. आर. हरनोट हिंदी साहित्य संसार के एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में हिमालय के पर्वतीय देहात की सांस्कृतिक-सामाजिक, लैंगिक असमानताओं एवं धार्मिक-पाखंडों की पड़ताल करने के साथ-साथ पर्यावरण के मुद्दों को पूरे जन-सरोकार एवं प्रतिबद्धता के साथ उठाया है। हरनोट जी हिमाचल प्रदेश के रहने वाले हैं तथा पहाड़ी जीवन की बारीकियों को करीबी से जानते हैं। वहां के पहाड़ और प्राकृतिक सौंदर्य, संस्कृति इतिहास और जनजीवन ने लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया है। इन्होंने 1990 से 1995 के बीच हिमाचल प्रदेश का भ्रमण कर उसकी फोटोग्राफी की है। वहां का इतिहास, संस्कृति, जनजीवन पहाड़ी सौंदर्य उन्हें आकर्षित करते थे लेकिन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक शोषण तथा पर्यावरण के दोहन ने उन्हें आहत भी किया। इसी आहत मन ने उन्हें कहानी लेखन में सक्रिय किया। उनकी अब तक प्रकाशित 8 मूल कहानी संग्रह है - पंजा, आकाशबेल, पीठ पर पहाड़, दारोश एवं अन्य कहानियां, जीनकाठी तथा अन्य कहानियां, मिट्टी के लोग, लिटन ब्लॉक गिर रहा है तथा कीलें। इन्हीं संग्रहों में से पर्यावरणीय चेतना से संबंधित कहानियों को चुनकर डॉ. उषारानी राव ने 'नदी गायब है' नामक एक संग्रह संपादित किया जिसमें माफिया, मिट्टी के लोग, बेजुबान दोस्त, लिटन ब्लॉक गिर रहा है, नदी गायब है, सड़ान, लाल होता दरख़्त एवं आभी कहानियाँ संग्रहित हैं।

हिमाचल प्रदेश भारत का एक महत्वपूर्ण और बहुत ही सुंदर पर्यटन स्थल है। यहां हर साल लाखों की संख्या में सैलानी आते हैं उसकी खूबसूरती निहारने। सामान्य सैलानियों और पहाड़ों से दूर शहरी जिंदगी बसर करने वालों के लिए पहाड़ केवल सौंदर्य के पर्याय हैं। उनकी नजर केवल पहाड़ों की खूबसूरती पर टिकी रहती है किंतु जिन लोगों का जीवन उन पहाड़ों, वहां के वनों, वहां बहने वाली नदियों और झीलों से जुड़ा हुआ है, वे पहाड़ों की खूबसूरती से परे उसके भीतर के दर्द की जटिलताओं, व्यवस्थाओं और अभाव को भी देख पाते हैं। एस. आर. हरनोट जी ऐसे ही एक साहित्यकार हैं जिनकी कहानियां, अब तक हमारे मन- मस्तिष्क में पर्वतीय अंचलों का सौंदर्य जिस प्रकार से विराजमान था, उन सारे प्रतिमानों को एक-एक करके ध्वस्त करती है। इनकी कहानियां पहाड़ों की सुंदरता को चीरते हुए उसके भीतर प्रवेश करके वहां के दुर्गम एवं अभावग्रस्त जीवन शैली को सबके सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं। केवल वहां के लोगों की दुर्गम जिंदगी ही नहीं बल्कि उनके जीवन को बचाए रखने वाले आसपास के पर्यावरण के तत्त्वों के निरंतर क्षयग्रस्त होने की चिंता भी उनकी कहानियों में दिखाई पड़ती है। लेकिन यह चिंता केवल हिमाचल के पहाड़ी लोगों, वहां के पर्यावरण की चिंता मात्र नहीं है। वे इसके बहाने पर्यावरण की सार्वदेशिक और सार्वभौमिक चिंता व्यक्त करते हैं। यह चिंता बढ़ते औद्योगीकरण की वजह से है, यह चिंता नव साम्राज्यवादी शक्तियों के बढ़ते लालच की वजह से है, यह चिंता सामान्य जन पर राजनेताओं के वर्चस्व की वजह से है, यह चिंता गांव और पहाड़ों में माफियाओं के प्रवेश की वजह से है, यह चिंता धार्मिक रूढ़ियों की वजह से भी है और यह चिंता पहाड़ी लोगों के सीधेपन की वजह से भी है। ये सारी वजहें

केवल हरनोट जी जैसे साहित्यकारों को ही बेचैन क्यों करती है? हम आप जैसे सामान्य शहरी लोगों, सामान्य पाठकों को भी बेचैन करनी चाहिए क्योंकि ये सारी वजहें दूर शहरों या देशों में रहने वाले सभ्यता की दौड़ में लगे हुए, धन और शक्ति संचय में लगे हुए, प्रकृति से अधिक मशीनी शक्ति से प्रेम करने वाले वर्गों को भी प्रभावित करती हैं- ग्लोबल वार्मिंग के तौर पर, रासायनिक धुंध के तौर पर, सफेद धुंध के तौर पर, मिट्टी के क्षरण के तौर पर, जल-भराव के तौर पर, जल की कमी के तौर पर, जल-प्रदूषण के तौर पर, जैव-विविधता के नुकसान के तौर पर, वन-उन्मूलन के तौर पर, बार-बार आने वाले भूकंपों एवं बाढ़ के तौर पर। हम सभी को हरनोट जी की कहानियां इन सारी समस्याओं, चिंताओं, उनके कारणों एवं निवारणों के उपायों से दो-चार करवाती हैं।

'नदी गायब है' संग्रह की 'बेजुबान दोस्त' किशन नाम के एक ऐसे साधारण और असामान्य मानसिकता वाले किशोर की कहानी है जिसने जंगल की प्रकृति और वहां निवास करने वाले जीवों के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया। प्रस्तुत कहानी में कई उपखंड है- किशन एक पहाड़ी लड़के का नाम, किशन तो जन्म का चरवाहा था, नया तोड़ की जमीन और फैक्ट्री का लगना, उस छोटी-सी नदी का गुम होना, सुरंग और अनुष्ठान की तैयारी, नया तोड़, बकरा और मुर्गियों का गुम होना, चीड़ों के जंगल और पेड़ों की निशानदेही, पुराने कोट कहां गुम गए?, किशन कन्हैया की फौज, किशन कन्हैया गायब और कोर्ट की जेबों के घोंसले। कहानीकार के द्वारा इस कहानी को उपखंडों में बांटने का निर्णय सोद्देश्य-सा लगता है। इन उपशीर्षकों में कहानीकार ने एक ओर किशन का जीवन चरित्र लिखा है तो दूसरी ओर देहात में फैक्ट्री आने के कारण तेजी से बदलते लोगों की जिंदगी और कंपनी तथा उसके अन्य समर्थकों की षड्यंत्रकारी चालों का बड़ी बारीकी के साथ चित्रण किया है। इस कहानी के संदर्भ में श्रीनिवास श्रीकांत का मत है- "यह कहानी समकालीन कहानी की फॉर्म और शैलियों से बिल्कुल अलग है। एक ऐसी कहानी जो लोक स्तर की होते हुए भी आमफहम नहीं कही जा सकती। कथा को कहानीकार ने सरलतम किस्सागोई की शैली में लिखा है।"1

कहानी में दिखाया गया है कि किशन एक जन्मजात पर्यावरण सजग बालक है। स्कूल के दिनों में जब उसके एक सहपाठी ने अपनी गुलेल से एक चिड़िया की हत्या कर दी तो किशन ने उससे उसकी आंख ही फोड़ डाली थी। इस कहानी में गांव के उस युवक किशन का पशु-पक्षियों तथा पेड़ों के प्रति प्रेम दिखाते हुए कंपनी द्वारा मुनाफे के लिए जंगलों के दोहन को भी चित्रित किया गया है। कंपनी ने गांव में फैक्ट्री लगाई है तथा पटवारी के साथ मिलकर फैक्ट्री के आसपास की जमीन को अवैध रूप से अपने नाम करवा ली है। अब कंपनी चीड़ वन को पूरी तरह से साफ करना चाहती है। किशन गांव के साथ मिलकर इस वन को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करता है परंतु कहीं से भी उसे सहायता नहीं मिलती क्योंकि "कंपनी के पीछे सरकार थी। उनके मंत्री थे। बड़े अफसर थे। इसलिए जब कभी कहीं भी विरोध के स्वर उठते तो वे बिना सुनवाई के दब जाते। इलाके के थाने उनके थे। प्रधान, सेक्रेटरी उनके थे। इंस्पेक्टर उनके थे। पटवारी- तहसीलदार उनके थे। यहां तक कि इलाके का विधायक भी कंपनी का होकर रह गया था।"2

ऐसी-ऐसी कंपनियां अपने मुनाफे के लिए एक तरफ अपने सामर्थ्य-भर राजनीतिक और पूंजी की शक्ति का प्रयोग करती हैं तो दूसरी तरफ जनता के बीच अपनी समाज-सुधारक की छवि बनाने का दिखावा भी करती हैं। इन दिखावों में ग्रामीण परिवारों की बेटियों की शादी का खर्च उठाना, स्कूल के भवन बनवाना, जगह-जगह पानी के नल लगवा देना, मंदिरों की मरम्मत करवाना, देवताओं की जात्रा करवाना, पर्यावरण दिवस पर करोड़ों रुपए खर्च कर देना, जनता में हजारों सफेद-हरी टोपियां और टीशर्ट बंटवाना आदि शामिल हैं। फैक्ट्री तक पत्थरों की सप्लाई के लिए कंपनी को एक सुरंग की जरूरत थी जिसकी केवल रात में चोरी-छुपे खुदाई होती थी। इस सुरंग के कारण 4:00 बजे सुबह तक

आसमान धुएं के बादल से गिर जाता था वहां बहने वाली नदी भी गायब हो गई थी। फिर भी मालवा किसी तरह से साफ नहीं हो पा रहा था। इसलिए सुरंग का काम सुचारू रूप से चले "उसके लिए ज्योतिष ने काम का दोबारा शुभारंभ पांच जीव-बलियों से करने का उपाय सुझाया था। इस महाबली अनुष्ठान में एक बच्चा, एक बकरा, एक मुर्गा, एक भैंस और एक मोर चाहिए था।"3

इन सारे अनैतिक और मानवीय पर्यावरण विरोधी कार्यों के खिलाफ किशन जानवरों की अपनी एक फौज खड़ी करता है। और उसकी फौजी पुलिस के डंडों और गोलियों के आगे झुकता नहीं है, भले मर जाता है। तब सरकार को अपने कदम पीछे खींचने पड़ते हैं। यह दृश्य अवास्तविक ज़रूर है लेकिन सामूहिक शक्ति के लिए प्रेरणाप्रद है। कहानीकर के इस प्रयोग के बारे में श्रीनिवास श्रीकांत लिखते हैं - "किशन यहां कुछ-कुछ 'पाइड पाइपर ऑफ़ हेमेलिन' के लीजेंडरी (लोक) नायक की हैसियत रखता है। आतुर प्राणियों का मानव के रूप में एक गोचर/गोचर मसीहा जिसके एक इशारे पर बिगड़ैल पालतू पशु भी सीधी चाल चलने लगते हैं। उसने अपनी प्रकट् उन्मादी स्थिति में भी पेड़-पेड़ पर पक्षियों एवं जीवों के लिए पानी के पौ लगाए। पशुओं का वह चारवाहा कहानी के अंत तक उनके साथ बना रहा।"4

प्रस्तुत कहानी में किशन प्रकृति, प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर चलने वाले उन जीवों तथा निरंतर सभ्यता व विकास की दौड़ एवं स्वार्थांधता में डूबे हुए मानव जो संवेदना रहित हुए जा रहे हैं, के बीच कड़ी का काम करता है। कहानी के अंत में बहुत ही प्रभावी और नया वृत्त चित्रित किया गया है। गांव के कई लोगों के कोर्ट गायब हुए हैं जो अंत में जंगल में पेड़ की सूखी टहनियों पर टंगे दिखाई देते हैं। जिनकी जेब में चिड़ियों ने घोंसले बनाए हैं और जिनमें उनके बच्चे चहक रहे हैं। यह संकेत है उस परिणाम का जब मनुष्य के द्वारा सभ्यता और विकास की अंधी दौड़ की वजह से वन्य प्राणियों, पक्षियों तथा पूरी प्रकृति को नष्ट-भ्रष्ट करने की कोशिश होगी तो मानवीय सभ्यता की निशानियां 'कोट' का भविष्य सूखी टहनियों पर टंगे होना ही निश्चित होगा।

'नदी गायब है' कहानी नदियों को सुखाकर बांध बनाने की त्रासदी को दर्शाती है। विकास के नाम पर ग्रामीण क्षेत्र की नदी पहाड़ वृक्षों को नष्ट किया जा रहा है। इससे एक तरफ प्राकृतिक असंतुलन और पर्यावरण दूषित हो रहा है तो दूसरी ओर ग्रामीणों के जीवन पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि उनकी जीविका इन्हीं पर आधारित होती है। ऐसी प्रगतिशीलता कभी स्वीकार्य नहीं हो सकती जो प्रकृति और उसके सानिध्य में रहने वाले ग्रामीण लोगों के पारंपरिक और वंशानुगत बसाव को चुनौती देती हो। कहानी का आरंभ मुख्य पात्र टीकम के हाँफते हुए गांव में प्रवेश से होता है। वह सूचना देता है कि नदी गायब हो गई है। लोग चिंतित होते हैं और पूरा गांव नदी की ओर बढ़ता है। वहां नदी सच में गायब थी। असल में बिजली बनाने के लिए नदी को सुखाया गया था। यह त्रासदी केवल एक नदी की नहीं है बल्कि समस्त नदियों की है। नदी के गायब होने की चिंता हरनोट की कहानी 'बेजुबान दोस्त' में भी मौजूद है।

पहाड़ों में पनऊर्जा उत्पादक परियोजनाओं के असुव्यवस्थित कार्य-विधि के कारण भारी मात्रा में भूस्खलन हुआ है। बारूद से चट्टानी पहाड़ों का विस्फोट कर यहां बड़ी-बड़ी योजनाओं का निर्माण हुआ है। बारूदी धमाकों से न सिर्फ पर्वतीय जमीन क्षतिग्रस्त हुई है बल्कि आसपास के देहाती घरों को भी नुकसान हुआ है। शिमला के करीब नाथपा झाकड़ी, देवघाटी कुल्लू में पार्वती पनऊर्जा परियोजना, किन्नर के साथ अन्य कई स्थानों पर मध्य और लघु स्तरीय ऊर्जा उत्पादक योजनाएं आदि मानव-निर्मित खतरे इसके लिए विशेष रूप से ज़िम्मेदार हैं। इन योजनाओं से सुरंग के ज़रिए जहां नद-प्रवाहों की दिशा बदली है, वहीं प्राकृतिक जल-स्रोत भी गायब हुए हैं। इन सब का दुष्परिणाम

हमने 2012 में हुए उत्तराखंड की त्रासदी के रूप में प्रत्यक्ष देखा है। प्रत्यक्ष नहीं तो टीवी में देखा है, जिसकी याद आज भी हमें अंदर तक कंपा देती है। हिमाचल प्रदेश में ज़मीन का धंस जाना, आस पास के मकानों में दरारें पड़ जाना फिर से चेतावनी है। ग्लेशियर का पिघलना, प्रकृति का रौद्र रूप धारण करना, बाढ़ आ जाना साथ में बड़ी-बड़ी चट्टानों का धंसना- यह सब उस लूट-खसोट का ही नतीजा है। ऐसे में मानव स्वयं अपना बड़ा शत्रु बन चुका है लेकिन उसे दिखाई नहीं देता। 'नदी गायब है' कहानी में टिकम नदी को बचाने के लिए विधायक से लेकर मंत्री तक दौड़ता है किंतु कोई लाभ नहीं होता। अंततः वह ईश्वर में लोगों की आस्था को आधार बनाकर जनसमूह इकट्ठा करता है। देवता की यात्रा निकालकर निर्माणाधीन स्थल तक जाने की कोशिश करता है। पर इन्हें रोकने के लिए पुलिस गोलियां चलती है। कई लोगों को जान गंवानी पड़ती है। अपने देवता को भी मानव की उद्दाम लालसा के सामने हारते हुए देखकर शेष बचे लोगों की चिंता दोगुनी हो जाती है- "परियोजना की बलि चढ़ जाएगा उनका गांव। न पशुओं को पानी, न खेतों को पानी। न जंगल की हरियाली, न नदी का शोर। कुछ भी नहीं। शेष रह जाएगा तो डायनामाइटों का शोर...। गिरते-दरकते पहाड़। पिघलते ग्लेशियर...।"5 इसकी प्रतिक्रिया में जन समूह आक्रोश में आकर रात के समय पुलिस ठिकानों को तहस-नहस कर देता है। "शायद जिस देवता को पुलिस के आतंक ने भगोड़ा बना दिया था। वही ग्रामीणों में सामूहिक रूप से प्रकट हो गया था और ग्रामजनों ने अपने आक्रोश से शासन की दमनकारी शक्तियों को तहस-नहस कर दिया था।"6

हरनोट जी की तीनों कहानियां माफिया, बेजुबान दोस्त और नदी गायब है- विध्वंसक तत्वों के खिलाफ बढ़ता हुआ आग का गोला साबित होती हैं। इस संग्रह के भूमिका लेखक श्रीनिवास श्रीकांत जी कहते हैं- "माफिया, बेजुबान दोस्त और नदी गायब है त्रिक भंगिमाओं की कहानियाँ हैं। एक में विद्रोह के बीज का वर्णन है, दूसरी में उसकी नायक सहित समष्टिगत अभिव्यक्ति जबकि तीसरी भंगिमा है शासन की बेरुखी के प्रति खुले विद्रोह की घोषणा।"7

नदियों पर बड़े-बड़े बाँधों के निर्माण ने नदियों की गति रोक दी है। जहाँ विकास के लिए बड़े-बड़े बाँधों का निर्माण आवश्यक है, वहीं इसके कई दुष्परिणाम देखे जा सकते हैं। जिस देश में नदी को ईश्वर मान कर पूजा जाता है, उसी देश में नदी की ऐसी दुर्गति हो रही है। कारखानों से लेकर घरों तक की सारी वर्जित चीजें नदी में ही फेंकी जाती है। बड़े- बड़े शहरों के कचरों से भरे नाले के मुहाने नदी पर ही जाकर खुलते हैं। एस. हारनोट की इन कहानियों में विकास के नाम पर बाँधों के निर्माण एवं उससे लोगों के विस्थापन के साथ ही साथ एक नदी के तड़प कर मरने की व्यथा दिखाई गई है।

'सड़ान' कहानी में नैतिक और प्राकृतिक दोनों स्तरों के प्रदूषण को कहानीकार ने दर्शाने की कोशिश की है। शासन-प्रशासन के साथ मिलकर नकली धर्माचार्यों का आडंबर किस प्रकार एक पूरे शहर को विषाक्त बना देता है, प्रस्तुत कहानी इसकी एक कारगर मिसाल है। नीरम नेगी जो इस कहानी का मुख्य चरित्र है, एक सेवानिवृत फौजी अफसर है जिसने पर्वतीय नगर की एक पहाड़ी पर अपने रहने के लिए घर बनाया है। घर के ठीक नीचे की भूमि के अंदर महात्मा भगवान दास और उसके चेले-चमेटों ने एक सुरंग का काम आरंभ किया है ताकि वहां की भूमि में वैष्णो देवी की तथाकथित पिंडियों को महात्मा के तत्वाधान में एक शक्तिपीठ के रूप में स्थापित किया जा सके और श्रद्धालुओं में अंध-श्रद्धा जगा कर धन कमाया जा सके। महात्मा का यह दावा है कि उसे देवी ने दर्शन दिए थे और उसका आदेश हुआ था कि उस स्थान पर शक्तिपीठ की स्थापना करें। इसके बहाने महात्मा और उसके पीछलग्गुओं ने एक बहुत बड़ा पाखंड खड़ा किया था। "उसके चेलोंचाटों ने प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा संत के मंसूबों का अच्छा खासा

प्रचार करना शुरू कर दिया था। उन्होंने इस बात को इस तरह प्रचारित किया था कि यहां के लोग वैष्णो माता के दर्शनों के लिए इतनी दूर नहीं जा सकते थे। फिर उस तरफ आतंकवाद का खतरा भी बढ़ रहा था। संत भगवान दास माता का परम भक्त होने के नाते उसे माता ने इस पहाड़ी शहर में आने की प्रेरणा दी है।"8 इससे न केवल साधारण जनता बल्कि शासन-प्रशासन भी आसानी से उसके लपेटे में आ गई क्योंकि बात धर्म की थी, देवी देवता की थी। सुरंग में डायनामाइट से विस्फोटों के फलस्वरुप आसपास की जमीन और घर प्रभावित हो रहे थे। नीरम नेगी का घर भी उस खतरे के घेरे में आ गया था। तब नीरव नेगी पहले तो स्वयं महात्मा भगवान दास से मुलाकात करता है फिर एक के बाद एक सरकार की गलियों से होते हुए मुख्यमंत्री जैसे सर्वोच्च पद तक भी आवाज लगाता है लेकिन इसका कोई सकारात्मक नतीजा नहीं निकलता।

इस कहानी में कहानीकार ने नकली धर्माचारिता के साथ-साथ शासन और प्रशासन के ढीलेपन एवं साधारण जन की भलमनसाहत और धार्मिक प्रवृत्ति का यथार्थपरक चित्र खींचा है। जिन-जिन कार्यालयों में यह मुद्दा लेकर नीरम नेगी पहुंचता है, उससे पहले महात्मा भगवान दास के कारींदे वहां पहुंचकर स्थिति अपने अनुकूल बना चुके होते हैं। लेकिन पर्यावरण की सुध किसी को नहीं रहती क्योंकि धर्म मन मस्तिष्क पर हावी हो गया था। नीरम नेगी देखता है कि थानेदार भी माता के पास उस गुफा तक जाने के लिए आतुर है। वह कहता है - "पहली विजिट है न। खाली कैसे जाएंगे। नई-नई माता निकली है। हमारा प्रमोशन डीएसपी के लिए होना है। माता की ब्लेसिंग रहेगी तो फटाफट होगी। नई माता है न। जल्दी सुनेगी। अब कलियुग में तो भगवान तक के काम पुलिस महकमे से ज्यादा पड़ते हैं।"9 माना जाता था कि पहाड़ों का पानी साफ और निर्मल होता था लेकिन वहीं का सिपाही उस पानी को कोस रहा है- "पानी पियो सर पानी पियो। नया-नया एक्वागार्ड लगाया है। एकदम साफ है। इस शहर के पानी से तो भगवान ही बचाए।"10 वक्ता की दृष्टि इस विडंबनात्मक स्थिति की ओर जाती भी नहीं है। धर्म की आड़ में प्रकृति को लूटने वालों के समान ही वे लोग भी ज़िम्मेदार हैं जो आंखों पर धर्म की पट्टी लगाकर वस्तुस्थिति को पहचानने की कोशिश ही नहीं करते। वरना धार्मिक भावनाओं को हथियार बनाकर नेता और व्यापारी वर्ग अपने आर्थिक लाभ के लिए सरकारी जमीन चाहे वह ग्रीन बेल्ट के अंतर्गत ही क्यों ना आए और कोर्ट के द्वारा किसी भी प्रकार के निर्माण की पाबंदी क्यों ना हो, अपने अधीन कैसे कर लेते हैं। एक दिन समाचार पत्रों में खबर छपी की माता की कृपा से गुफा में एक और चमत्कार हुआ सुखी पहाड़ी के बीच से पानी टपकने लगा। श्रद्धालुओं ने उसे चरणामृत के रूप में ग्रहण किया। इसकी वास्तविकता की खोजबीन करते हुए नीरम नेगी पाता है कि "गुफा में हुए ब्लास्ट से टैंक फट गया था और गंदा पानी बाहर निकाल कर एक छोटी सी कूहल से बिल्कुल गुफा के ऊपर जाकर उसके भीतर रिस रहा था। देवी के चमत्कार का राज खुल गया।"11 अतः नीरम को अंततः अपने पुत्र के नाम से उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पास एक पत्र भेजना पड़ता है। कहानीकार ने इस कहानी का अंत कुछ फिल्मी तरीके से किया है। एक सुबह अखबार में तीन समाचार एक साथ छपे थे। पहला समाचार था, आज दोपहर बाद संत भगवान दास देवी की पिंडियों को गुफा के भीतर जमीन से निकालेगा। दूसरा समाचार लिखा था हाई कोर्ट ने एक बच्चे के आवेदन का संज्ञान लेते हुए गुफा के काम पर पाबंदी के आदेश दिए। तीसरे समाचार की हेड लाइन थी - देर रात देवी की गुफा ढह गई, कई साधुओं और मजदूरों के मरने की आशंका है।

'आभी' कहानी में आभी एक ऐसी चिड़िया है जिसने अपने डैनों पर मनुष्यों के कर्तव्यों का बोझ उठा रखा है। इस चिड़िया का मानवीकरण कर हरनोट जी ने मनुष्यता के मुंह पर बहुत जोरदार तमाचा मारा है। वह मनुष्य जो खुद को

ईश्वर से भी शक्तिमान समझने लगा है, हरनोट जी ऐसे लोगों की शक्तियों को आभी चिड़िया के माध्यम से चुनौती देते हैं। जो कर्त्तव्य पृथ्वी पर मौजूद सबसे अधिक संवेदनशील, विवेकशील, बुद्धिशाली प्राणी का होना चाहिए, उसे एक नन्ही चिड़िया निभाती हुई दिखाई देती है। मानवता के लिए इससे बढ़कर शर्म की बात और क्या हो सकती है? कहानीकार लिखते हैं- "आभी नहीं चाहती उसकी झील को कोई गंदा करे। उसमें कोई ऐसी-वैसी चीज ना फेंके जो पानी को गंदला या खराब कर दे।.... वहां आए पर्यटकों से लड़ती है। हवा से झगड़ती है। जंगलों के पेड़ों से लोहा लेती है। झील के पानी को पानी की तरह साफ रहने देना चाहती है। जैसे ही उसमें कोई तिनका जाए वह झट से अपनी चोंच से उठाकर किनारे फेंक देती है। लोग तरह-तरह की चीज़ें झील में फेंकने लगे हैं। वे नहीं जानते नदियों, झीलों के पानी का मोल। उन्हें नहीं पता हवाओं की ताजगी।"12

आभी झील में गिरते तिनकों और पत्तों से ज्यादा अब इंसानों से डरने लगी है। क्योंकि दिन भर न जाने कितने लोग यहां घूमने आते हैं। कोई पेड़ों की ओट में बैठे खाते-पीते हैं और वहीं प्लास्टिक के लिफाफे, चिप्स और पानी की खाली बोतलें फेंक कर चले जाते हैं। कोई मंदिर से दूर नीचे झाड़ियां में गंदी-गंदी हरकतें करते हैं और कई तरह के कचरा वहां डालकर चल जाते हैं। यह नई दुनियादारी उसे हैरान परेशान किए रखती है। उसके एकांत में यह बाहरी दखल उसे बर्दाश्त नहीं। अभी के लिए यह प्लास्टिक का कचरा आफत बन गया है। सिर्फ आप ही के लिए ही नहीं बल्कि पूरी धरती के लिए ही यह प्लास्टिक का कचरा आफत बन गया है। धरती पर जन्म लेने वाले, जीने वाले सभी जीव- जंतुओं के लिए यह आफत बन गया है और इस आफत को पैदा करने वाला और बढ़ने वाला केवल और केवल मनुष्य है। "यह किसी दूसरी दुनिया या अजनबी जंगल का कचरा है जो इंसानों के झोलों से निकलता है।"13

इस कहानी में प्लास्टिक के कचरे के साथ-साथ वायु प्रदूषण का मुद्दा भी केंद्र में है पहाड़ों पर निरंतर आने वाले सैलानियों की बढ़ती जनसंख्या से उनकी पारिस्थितिकी में असंतुलन पैदा हो रहा है। डीजल और पेट्रोल की धुएं से शहर तो जली हुई हड्डियों के रंग के हो गए हैं। अब यह डीजल और पेट्रोल पहाड़ों की हरियाली वहां की पशु पक्षियों इन सबको भी अपने धुएं के आगोश में जप्त कर ले रहा है। कहानीकार शहरी पाठकों की आंखें खोलने के लिए यह व्यंग्य करते हैं- "वे नहीं जानते कि उनकी गाड़ियों के शोर से जंगली जानवरों के एकांत खत्म हो गए हैं और वे दूर कहीं अपनी-अपनी खोहों में डर के मारे दुबके पड़े हैं। उन्हें नहीं पता कि बूढ़ी नागिन मां की आंखें डीजल और पेट्रोल के धुएं से बैठने लगी हैं। वे नहीं जानते कि तपस्या में लीन ये देवदारू अपनी उम्र के आखिरी पड़ाव में हैं और कब अपना जीवन खत्म कर जमींदोज हो जाएंगे। उन्हें नहीं पता बान अब वैसा हरियाता नहीं है जैसा पहले सजता-संवरता था।"14

सन्दर्भ सूची:

1) राव, उषारानी (सं), नदी गायब है: पर्यावरणीय चेतना की कहानियाँ. एस.आर. हरनोट, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2018, पृष्ठ- 14
2) वही, पृष्ठ- 74
3) वही, पृष्ठ- 75
4) वही, पृष्ठ- 14
5) वही, पृष्ठ- 108
6) वही, पृष्ठ- 108

7) वही, पृष्ठ- 18
8) वही, पृष्ठ- 122
9) वही, पृष्ठ- 124
10) वही, पृष्ठ- 124
11) वही, पृष्ठ- 131
12) वही, पृष्ठ- 153
13) वही, पृष्ठ- 154
14) वही, पृष्ठ- 154

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM